पंजीयन प्रपत्र

नाम.....

पद.....

संस्था.....

.....

शोध पत्र का शीर्षक.....

.....

पंजीयन शुल्क

- शिक्षक – 800₹ • शोध छात्र व अन्य – 500 ₹
- प्रतिभागी अपने रहने/ठहरने की व्यवस्था स्वयं करें।

आयोजन समिति

प्रो. अनिल जैन

डॉ. श्रुति शर्मा	डॉ. उर्वशी शर्मा
डॉ. जगदीश गिरी	डॉ. करतार सिंह
डॉ. गीता सामौर	डॉ. रेणु व्यास
डॉ. अर्जुन सिंह	डॉ. मंदाकिनी मीणा
डॉ. कैलाश पंवार	विशाल विक्रम सिंह
वर्षा वर्मा	अनिता रानी
तारावती मीना	सुंदरम शांडिल्य

प्रेषक :

डॉ. विनोद शर्मा

संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर-302004

मो. : 9950997599 ईमेल : vinoddr68@gmail.com

राष्ट्रीय संगोष्ठी

8-9 नवम्बर 2016

मध्यकालीन वैष्णव साहित्य : भाषा, समाज और संस्कृति

प्रति,

.....

.....

.....

मध्यकालीन वैष्णव साहित्य

भाषा, समाज और संस्कृति

राष्ट्रीय संगोष्ठी

8-9 नवम्बर 2016

संरक्षक

श्री सी.के.जोशी

संरक्षक, वैष्णव साहित्य संरक्षण
एवं शोध संस्थान जयपुर

संयोजक

डॉ. विनोद शर्मा

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
मो. : 9950997599, 7597530500

आयोजन सचिव

डॉ. वीरेन्द्र सिंह

सहायक आचार्य
मो. : 9460382907

आयोजक

वैष्णव साहित्य अध्ययन केन्द्र

हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
फोन : 0141-2711070-2404

मध्यकालीन वैष्णव साहित्य

भाषा, समाज और संस्कृति

वैदिक काल से लेकर मध्य काल तक भक्ति भावना का विकास अनेक रूपों व मार्गों से होकर प्रशस्त हुआ है। वैदिक युगीन प्रकृति मूलक सगुण भक्ति से उपनिषद्कालीन निर्गुण भक्ति के रास्ते मध्यकाल से पूर्व जैन, बौद्ध, सिद्ध साधकों द्वारा अपने-अपने ढंग से इसमें योगदान किया गया।

भागवत धर्म का उदय ईसा से चार-पाँच शती पूर्व ही हो गया था। गुप्तकाल में विष्णु के अनेक अवतारों की पूजा-अर्चना शुरू हो गई थी। उस समय के अभिलेखों में विष्णु के वासुदेव, नारायण आदि नामों का उल्लेख मिलता है। निश्चित ही वैष्णव भक्ति का बीज रूप हमें वैदिक धर्म में दिखाई पड़ जाता है। वैष्णव धर्म का व्यवस्थित रूप हमें विष्णु पूजा के रूप में भागवत धर्म के प्रतिपादक पांचरात्र, सात्वत एवं नारायणी धर्म की शाखाओं में दृष्टिगत होता है। इसके अतिरिक्त वैष्णव भक्ति मार्ग का वर्णन हमें महाभारत, गीता और पुराण ग्रंथों में भी मिलता है। पुराणों ने वैष्णव भक्ति के लिए अवतारी राम और कृष्ण के चरित्र एवं लीलाओं का विस्तार प्रस्तुत कर एक नये आयाम के लिए अवसर प्रदान किया। पुराणों में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के स्थान पर कृष्ण की लीलाओं का विस्तृत वर्णन है। वैष्णव धर्म का वर्तमान रूप पुराणों द्वारा प्रतिपादित और समर्थित होकर ही सार्वजनीन बना है। वैष्णव भक्तकवियों ने विष्णु को अपना आराध्य बनाया और उनके अवतारी रूप-राम और कृष्ण के रूप, शील गुण, सौन्दर्य आदि के मनोहारी चित्र अपनी कविता में अंकित किये। वैष्णव भक्ति का मुख्य आधार प्राणिमात्र के प्रति प्रेम और उदारता है। समस्त मानव जाति के हृदय में भक्ति भाव जाग्रत करना इसका लक्ष्य रहा है।

लगभग इसी अवधि में दक्षिण भारत में तमिल भक्त कवि आलवारों द्वारा वैष्णव भक्ति का सूत्रपात किया गया। वैष्णव भक्ति का जो स्वरूप वर्तमान में है, वह बहुत कुछ उसी का परिणाम है। आलवारों का समय लगभग पांचवीं से नवीं शताब्दी ईसा तक माना जाता है। इन आलवार भक्तों द्वारा विपुल भक्ति साहित्य का सृजन भी किया गया जो 'नालायिर दिव्य प्रबन्धम्' में संकलित है। आलवारों ने वैष्णव भक्ति को लोकप्रिय बनाया तथा वैष्णव भक्ति का द्वार सबके लिए खोल दिया। वैष्णव भक्ति ने पहली बार जन भाषा का प्रयोग और संगीत का समावेश कर ऐसे भक्तिमय वातावरण का सृजन किया जिसमें वर्ण, वर्ग, लिंग, जाति के बन्धन तोड़कर मानव मात्र को अपने साथ ले चलने की क्षमता थी। आलवारोत्तर काल अर्थात् मध्य युग में वैष्णव भक्ति आन्दोलन प्रबल होता गया और एक व्यापक जन आन्दोलन बन गया, जिसके फलस्वरूप हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में विशाल वैष्णव भक्ति साहित्य का प्रणयन हुआ।

मध्ययुगीन वैष्णव भक्ति आन्दोलन को 'प्रबन्धम' और 'भागवत' जैसे ग्रंथों ने अत्यधिक प्रभावित किया। परवर्ती युग में इन दोनों ग्रंथों को ही आधार मानकर अनेक वैष्णव सम्प्रदायों ने वैष्णव भक्ति के आकर्षक तत्त्वों का प्रतिपादन किया तथा विविध रूपी साहित्य के सृजन के लिए मार्ग प्रशस्त किया। निश्चय ही इस युग का साहित्य गुणवत्ता और परिणाम दोनों ही दृष्टियों से अत्यन्त समृद्ध है। सगुण भक्ति काव्य ने मध्ययुगीन भारतीय मानस में जिस प्रकार ईश्वरीय विश्वास पैदा किया, वह अद्भुत और अभूतपूर्व था। इस काल के भक्त कवियों ने लोकमानस को आश्वस्त करने में माता-पिता, पिता-पुत्र, स्वामी-सेवक, पति-पत्नी, भाई-बहिन, राजा-प्रजा आदि पारिवारिक एवं सामाजिक सम्बन्धों को स्थापित किया और उनको आदर्श की भित्ति पर प्रतिष्ठित करने में सफलता प्राप्त की। तुलसीदास का 'रामचरित मानस' इसका सबसे बड़ा प्रमाण है। उन्होंने समन्वय पर बल देकर समाज को विशृंखलित होने से बचाया।

वैष्णव भक्ति की लोकप्रियता ने मध्यकाल में लोक भाषाओं और बोलियों के विकास में महती भूमिका निभाई। बांग्ला, असमिया, ओडिया, कन्नड़, तेलुगु, मराठी, गुजराती भाषाओं सहित हिन्दी की विभिन्न बोलियों में भक्तों की वाणियाँ अभिव्यक्ति पाने लगी। इससे इन बोलियों और भाषाओं में नए-नए शब्दों, छन्दों और राग-रागिनियों का विकास हुआ। मध्ययुगीन भारतीय भाषाओं के साहित्य में जो भावात्मक एकता परिलक्षित होती है, उसका प्रमुख माध्यम वैष्णव भक्ति साहित्य ही है। इस आंदोलन ने न केवल भाषा और साहित्य को प्रभावित किया अपितु भारतीय जन-जीवन, समाज और संस्कृति पर भी इसका व्यापक प्रभाव पड़ा। समाज में व्याप्त ऊँच-नीच आदि भेदभाव को मिटाकर समानता और एकता स्थापित करने का महान् कार्य इसी साहित्य से संभव हुआ। भारत के सामाजिक इतिहास में यह बड़ा सुधार आन्दोलन माना जाता है तो धार्मिक क्षेत्र में भी उदारता और मानवीय मूल्यों की स्थापना करने में इसका महत्त्वपूर्ण योग रहा है।

विभिन्न क्षेत्रों की लोक संस्कृति में एकत्व का सूत्र बनकर अनेकता में एकता का मार्ग प्रशस्त करने तथा विविध कलाओं को विकास की चरम सीमा पर पहुँचाने का श्रेय भी इसी को दिया जा सकता है। काव्य कला, संगीतकला, चित्रकला, मूर्तिकला और स्थापत्यकला को सुविकसित कर सांस्कृतिक समन्वय का महत्त्वपूर्ण कार्य भी इसी से सम्पन्न हुआ। मध्ययुग में विकास के चरम पर पहुँचने वाला वैष्णव भक्ति आन्दोलन और इसके परिणामस्वरूप रचित साहित्य आज भी भारतीय समाज का पथ-प्रदर्शन कर रहा है। समय के साथ आवश्यक परिवर्तन करते हुए अपनी मूल भावना को बनाए रखकर भारत राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिए यह आधार भूमि प्रस्तुत करता है। आज विश्व के सामने उपस्थित अनेक चुनौतियों का समाधान इस साहित्य के पठन-पाठन और इसके अनुरूप जीवन-यापन से हो सकता है, इसीलिए यह आज भी प्रासंगिक है।

वैष्णव साहित्य अध्ययन केन्द्र, हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के अन्तर्गत आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य वैष्णव समाज के महत्त्व पर दृष्टि डालते हुए भारतीय समाज, संस्कृति और भाषाओं पर पड़े उसके प्रभाव को उद्घाटित करना है।

प्रस्तावित विषय

- वैष्णव भक्ति का उद्भव और विकास
- वैष्णव भक्ति का अखिल भारतीय स्वरूप
- वैष्णव भक्ति में विभिन्न सम्प्रदायों का योगदान
- वैष्णव भक्ति साहित्य और भारतीय भाषाएं
- लोक भाषाओं और बोलियों में वैष्णव भक्ति का स्वरूप
- वैष्णव भक्ति में आलवारों का योगदान
- वैष्णव साहित्य और स्त्री विमर्श
- वैष्णव साहित्य और दलित चेतना
- वैष्णव साहित्य और किसान
- वैष्णव साहित्य और सर्वधर्म समभाव
- वैष्णव साहित्य और लोकतांत्रिक समाज व्यवस्था
- वैष्णव साहित्य में निहित आधुनिकता की अवधारणा
- वैष्णव साहित्य में अर्थव्यवस्था के संदर्भ
- भारतीय इतिहास लेखन में वैष्णव साहित्य का योगदान
- वैष्णव साहित्य की प्रासंगिकता